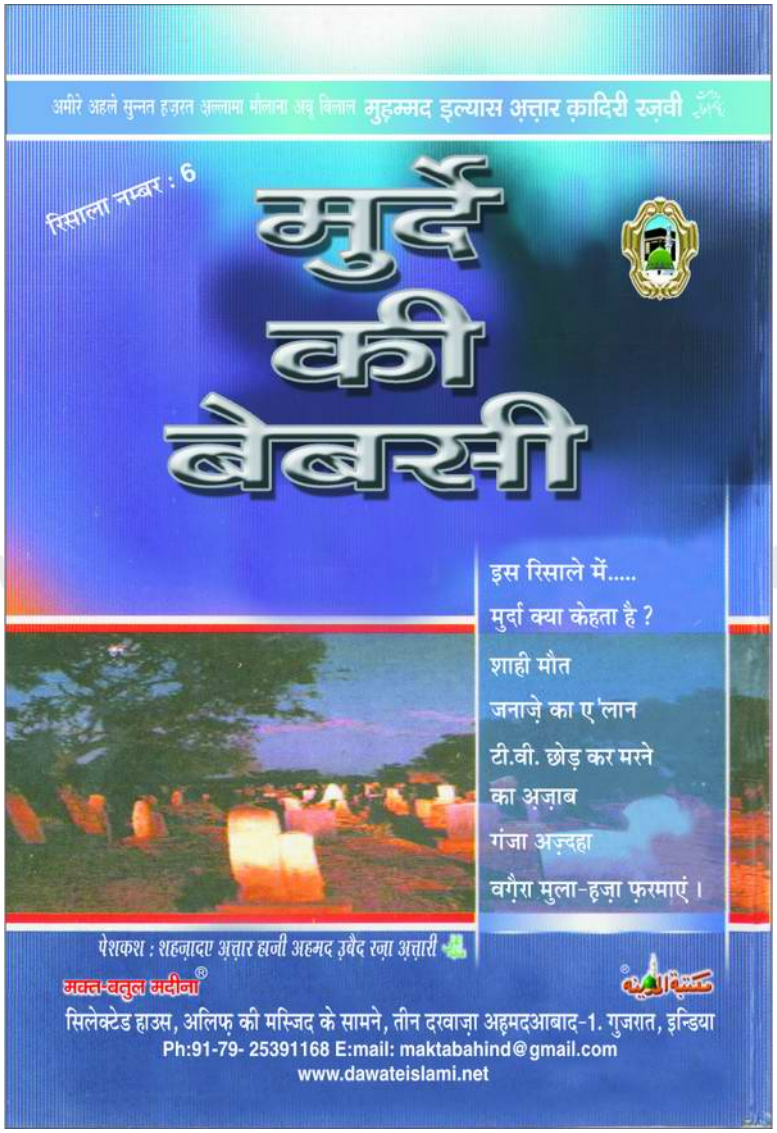

अमीरे अहले सुन्नत हज़रत अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी रज़वी
रिसाला नम्बर : 6
मुर्दे की बेबसी
इस रिसाले में.....
मुर्दा क्या केहता है ?
शाही मौत
जनाज़े का ए'लान
टी.वी. छोड़ कर मरने का अज़ाब
गंजा अज़्दहा
वग़ैरा मुला-हज़ा फ़रमाएं ।
पेशकश : शहज़ादए अत्तार हाजी अहमद उबैद रज़ा अत्तारी
मक्त-बतुल मदीना
सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा अहमदआबाद-1. गुजरात, इन्डिया
Ph:91-79- 25391168 E:mail: maktabahind@gmail.com
www.dawateislami.net

"मुर्दे की बेबसी"

येह बयान **मुर्दे की बेबसी** शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानीए दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल ***मुह़म्मद इल्यास अ़त़्त़ार क़ादिरी*** रज़वी ज़ियाई دامت برکاتہم العالیہ का है, जिसे मजलिसे **मक्तबतुल मदीना** ने उर्दू में शाएअ़ फ़रमाया है। **मजलिसे तराजिम** (**दा'वते इस्लामी**) ने इस बयान को हिन्दी रस्मुल ख़त में **मक्त-बतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है।

www.dawateislami.net

इस में अगर किसी जगह कमीबेशी पाए तो **मजलिसे तराजिम** को मुत्त़लअ़ फ़रमा कर स़वाब कमाइये।

राबित़ा:- ***मजलिसे तराजिम***
(दा'वते इस्लामी)
मक्त-बतुल मदीना®
अह़मदआबाद। **फ़ोन: 0091-79-2539 11 68**
Email : maktabahind@gmail.com

786 फ़ेहरिस 92

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	4
मुर्दा और ग़स्साल	4
मुर्दा क्या केहता है ?	4
उ़म्र भर की भागदौड़	5
क़ब्र की दिल हिला देने वाली कहानी	5
शाही मौत	7
सल्त़नत काम न आई	7
दुन्या में आमद का मक़्स़द	7
वज़ारतें काम नहीं आएगी	8
चार बे बुन्याद दा'वे	9
पहला दा'वा	9
दूसरा[2] दा'वा	9
तीसरा[3] दा'वा	9
चौथा[4] दा'वा	10
जनाज़े का ए'लान	10
मुर्दों से गुफ़्तुगू	11
T.V. छोड़ कर मरने पर अ़ज़ाबे क़ब्र	11
आका ﷺ की मुबारकबाद	12
हीले बहाने मत कीजिये	12
ख़ौफ़नाक वादी	13
गन्जा अज़्दहा	13
40 दिन तक नमाज़ें ना मक़्बूल	14
शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की शराब से नफ़रत	14
ज़ालिम वालिदैन की भी इत़ाअ़त	14
वा'दा ख़िलाफ़ी का वबाल	15
पेट में सांप	15
36 बार ज़िना से बुरा	16
जहन्नम का तोशा	16
सात म-दनी उसूल	16

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ؕ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِالْمُرْ سَلِيْنَ ؕ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّ جِيْم ؕ بِسْمِ اللّٰهِالرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم ؕ

मुर्दे की बेबसी

शैत़ान लाख सुस्ती दिलाए येह रिसाला मुकम्मल पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ आप अपने दिल में म-दनी इन्क़िलाब बरपा होता मह़सूस फ़रमाएंगे।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

ह़ुज़ूर सरापा नूर, शाफ़ेए यौमुन्नुशूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे नूरुन अ़ला नूर है, "मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ कर अपनी मजालिस को आरास्ता करो, कि तुम्हारा दुरूदे पाक पढ़ना बरोज़े क़ियामत तुम्हारे लिये नूर होगा।"

(फ़िरदौसुल अख़्बार, ह़दीस:3148, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:417, दारुल किताबिल अ़रबी, बैरूत)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मुर्दा और ग़स्साल

आ़लिम व मुह़द्दिस़ और मश्हूर ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़ियान स़ौरी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी है कि मरने वाला हर चीज़ को जानता है, ह़त्ता कि ग़स्साल से केहता है, तुझे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम है तू ग़ुस्ल में मेरे साथ नरमी कर और जब वोह अपने जनाज़े की चारपाई पर होता है, उस से कहा जाता है, "अपने बारे में लोगों की बातें सुन।"

(शरहु़स्सुदूर, स़-फ़ह़ा:95, दारुल कुतुबिल इ़ल्मिय्या, बैरूत)

www.dawateislami.net

मुर्दा क्या केहता है ?

अमीरुल मुअ्मिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ रिवायत करते हैं, नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया, मुर्दा जब तख़्त पर रखा जाता है और उसे ले कर अभी तीन क़दम ही चले होते हैं कि वोह बोलता है और उस के कलाम को इन्सानों और जिन्नों के इ़लावा अल्लाह तआ़ला जिसे चाहता है सुनवाता है। मुर्दा केहता है, "ऐ मेरे भाइयो ! और ऐ मेरा जनाज़ा उठाने वालो ! तुम्हें दुन्या धोके में न डाल दे जैसा कि मुझे डाले रखा और ज़माना तुम्हारे साथ न खेले जैसा कि मेरे साथ खेला, मैं ने जो कुछ कमाया वोह अपने वु-रस़ा के लिये छोड़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ियामत वाले दिन मुझ से ह़िसाब लेगा और मेरी गरिफ़्त फ़रमाएगा। ह़ालां कि तुम लोग मुझे रुख़्स़त करते और मुझे पुकारते (या'नी मेरे लिये रोते) हो।"

(शरहु़स्सुदूर, स़-फ़ह़ा:96, दारुल कुतुबिल इ़ल्मिय्या बैरूत)

जीतने दुन्या सिकन्दर था चला   जब गया दुन्या से ख़ाली हाथ था

---

1. येह बयान अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, दा'वते इस्लामी के तीन रोज़ा बैनल अक़्वामी इजतिमाअ़ (11,12,13 शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म सिने 1423 हिजरी बरोज़ इतवार मदीनतुल औलिया मुल्तान) में फ़रमाया। ज़रूरी तरमीम के साथ तह़रीरन ह़ाज़िरे ख़िदमत है।

-उ़बैद रज़ा इब्ने अ़त्तार

उ़म्र भर की भागदौड़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! उस वक़्त कैसी बेकसी होगी जब रूह़ जिस्म से जुदा हो चुकी होगी, वोह किस क़-दर बेबसी का आ़लम होगा जिस वक़्त बेश क़मत कपड़े उतारे जा रहे होंगे, ग़स्साल नहला रहा होगा, लट्ठे का कफ़न पहनाया जा रहा होगा, कैसी ह़सरत की घड़ी होगी जब जनाज़ा उठाया जा रहा होगा, हाए ! हाए ! वोह दुन्या जिस के लिये उ़म्र भर भागदौड़ की थी, जिस की ख़ातिर रातों की नींदें उड़ाई थीं, त़रह़ त़रह़ के ख़त़रे मोल लिये थे, ह़ासिदीन के रुकावटें खड़ी करने के बा वुजूद भी जान लड़ा कर दुन्या का माल कमाते रहे थे, दौलत इकट्ठी करते रहे थे, मकान को निहायत ही एहतिमाम के साथ मज़बूत ता'मीर किया था, इस को त़रह़ त़रह़ के फ़नीर्चर से आरास्ता किया था, वोह सब छोड़ कर रुख़्स़त होना पड़ रहा होगा । आह ! क़ीमती लिबास खूंटी से टंगा रह जाएगा, कार हुई तो गेरिज में खड़ी रह जाएगी, खेल कूद के आलात, ऐ़शो त़रब के अस्बाब और हर त़रह़ का सामान धरा का धरा रह जाएगा । उस वक़्त मुर्दे की बेबसी इन्तिहा को पहुंचेगी जब उस को रौशनियों से जगमगाती आ़रिज़ी ख़ुशियों से मुस्कराती दुन्याए ना पाएदार के फ़ानी घर से निकाल कर अंधेरी क़ब्र में मुन्तक़िल करने के लिये कन्धों पर लाद कर सूए क़ब्रिस्तान चल पड़ेंगे ।

आ़लमे इन्क़िलाब है दुन्या *चन्द लम्ह़ों का ख़्वाब है दुन्या*
फ़ख़्र क्यूं दिल लगाएं इस से *नहीं अच्छी, ख़राब है दुन्या*

www.dawateislami.net

क़ब्र की दिल हिला देने वाली कहानी

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ एक जनाज़े के साथ क़ब्रिस्तान तश्रीफ़ ले गए, वहां एक क़ब्र के पास बैठ कर ग़ौरो फ़िक्र में डूब गए, किसी ने अ़र्ज़ की, "या अमीरल मुअ्मिनीन ! आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ यहां तन्हा कैसे तश्रीफ़ फ़रमा हैं ? फ़रमाया, "अभी अभी एक क़ब्र ने मुझे पुकार कर बुलाया और बोली, ऐ उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ मुझ से क्यूं नहीं पूछते कि मैं अपने अन्दर आने वालों के साथ क्या बरताव करती हूं ? मैं ने उस क़ब्र से कहा, मुझे ज़रूर बता । वोह केहने लगी, जब कोई मेरे अन्दर आता है तो मैं उस का कफ़न फाड़ कर जिस्म के टुकड़े टुकड़े कर डालती और उस का गोश्त खा जाती हूं, क्या आप मुझ से येह नहीं पूछेंगे कि मैं उस के जोड़ों के साथ क्या करती हूं ? मैं ने कहा, ज़रूर बता । तो केहने लगी, "हथेलियों को कलाइयों से, घुटनों को पिंडलियों से और पिंडलियों को क़दमों से जुदा कर देती हूं ।" इतना केहने के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ हिचकियां ले कर रोने लगे । जब कुछ इफ़ाक़ा हुवा तो कुछ इस त़रह़ इ़ब्रत के म-दनी फूल लुटाने लगे, "ऐ इस्लामी भाइयो ! इस दुन्या में हमें बहुत थोड़ा अ़रसा रहना है, जो इस दुन्या में (सख़्त गुनहगार होने के बा वुजूद) स़ाह़िबे इक़्तिदार है वोह

(आख़िरत में) इन्तिहाई ज़लीलो ख़्वार है। जो इस जहां में मालदार है वोह (आख़िरत में) फ़क़ीर होगा। इस का जवान बूढ़ा हो जाएगा और जो ज़िन्दा है वोह मर जाएगा। दुन्या का तुम्हारी त़रफ़ आना तुम्हें धोके में न डाल दे, क्यूं कि तुम जानते हो कि येह बहुत जल्द रुख़्स़त हो जाती है। कहां गए तिलावते क़ुरआन करने वाले ? कहां गए बैतुल्लाह का ह़ज करने वाले ? कहां गए माहे र-मज़ान के रोज़े रखने वाले ? ख़ाक ने उन के जिस्मों का क्या ह़ाल कर दिया ? क़ब्र के कीड़ों ने उन के गोश्त का क्या अन्जाम कर दिया ? उन की हड्डियों और जोड़ों के साथ क्या हुवा ? अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! दुन्या में येह आराम देह नर्म नर्म बिस्तर पर होते थे लेकिन अब वोह अपने घर वालों और वत़न को छोड़ कर राह़त के बा'द तंगी में हैं, उन की बेवाओं ने दूसरे निकाह़ कर के दोबारा घर बसा लिये, उन की औलाद गलियों में दर बदर है, उन के रिश्तेदारों ने उन के मकानात व मीरास़ आपस में बांट ली। वल्लाह ! उन में कुछ ख़ुशनस़ीब हैं जो क़ब्रों में मज़े लूट रहे हैं और वल्लाह ! बा'ज़ क़ब्र में अ़ज़ाब में गरिफ़्तार हैं।

अफ़्सोस स़द हज़ार अफ़्सोस, ऐ नादान ! जो आज मरते वक़्त कभी अपने वालिद की, कभी अपने बेटे की तो कभी सगे भाई की आंखें बन्द कर रहा है, उन में से किसी को नहला रहा है, किसी को कफ़न पहना रहा है, किसी के जनाज़े को कन्धे पर उठा रहा है, किसी के जनाज़े के साथ जा रहा है, किसी को क़ब्र के गढ़े में उतार कर दफ़्ना रहा है। (याद रख ! कल येह सभी कुछ तेरे साथ भी होने वाला है) काश मुझे इ़ल्म होता ! कौन सा गाल (क़ब्र में) पहले ख़राब होगा" फिर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रोने लगे और रोते रोते बेहोश हो गए और एक हफ़्ते के बा'द इस दुन्या से तश्रीफ़ ले गए।

(रौज़ुल फ़ाइक़, स़-फ़हा:138, दारुल कुतुबिल इल्मिय्या, बैरूत)

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی एह्याउल उ़लूम में फ़रमाते हैं, "ब वक़्ते वफ़ात ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ज़बान पर येह आयते करीमा जारी थी:

تِلْكَ الدَّارُ الْاٰخِرَةُ نَجْعَلُهَا لِلَّذِيْنَ لَا يُرِيْدُوْنَ عُلُوًّا فِي الْاَرْضِ وَلَا فَسَادًا ؕ وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِيْنَ ۝

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान: येह आख़िरत का घर हम उन के लिये करते हैं जो ज़मीन में तकब्बुर नहीं चाहते और न फ़साद और आक़िबत परहेज़गारों ही की है।

(स़-फ़हा:20, अल ह़दीस़:83)

(एह्याउल उ़लूम, जिल्द:4, स़-फ़हा:510, दारुल कुतुबिल इल्मिय्या, बैरूत)

शाही मौत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की येह रिक़्क़त अंगेज़ ह़िकायत अ़क़्लमन्दों के लिये ज़बरदस्त ताज़ियानए इ़ब्रत है । ***शाही मौत*** का एक मज़ीद वाक़ेआ़ समाअ़त फ़रमाइये चुनान्चे हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی एह्याउल उ़लूम में फ़रमाते हैं, ''ऐन जांकनी के आ़लम में किसी ने ख़लीफ़ा अ़ब्दुल मलिक बिन मरवान से पूछा, इस वक़्त आप ख़ुद को कैसा पा रहे हैं ? जवाब दिया, बिल्कुल वैसा ही जैसा कि क़ुरआने मजीद के सातवें पारे में सूरतुल अन्आ़म की आयत नम्बर 95 में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया है कि:-

وَلَقَدْ جِئْتُمُوْنَا فُرَادٰى كَمَا خَلَقْنٰكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّ تَرَكْتُمْ مَّا خَوَّلْنٰكُمْ وَرَآءَ ظُهُوْرِكُمْ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान: और बेशक तुम हमारे पास अकेले आए जैसा हम ने तुम्हें पहली बार पैदा किया था । और पीठ पीछे छोड़ आए जो मालो मत़ाअ़ हम ने तुम्हें दिया था ।

(पारह :7, अल अन्आ़म:95)

(एह्याउल उ़लूम, जिल्द:4, स़-फ़ह़ा:510, दारुल कुतुबिल इ़ल्मिय्या, बैरूत)

सल्त़नत काम न आई

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی एह्याउल उ़लूम में फ़रमाते हैं, ''मश्हूर अ़ब्बासी ख़लीफ़ा हारून रशीद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का जब आख़िरी वक़्त आया तो वोह अपने कफ़न को उलट पलट कर बार बार ह़सरत से देखते और पारह 29 सूरतुल ह़ाक़्क़ह की आयतें पढ़ते:-

مَآ اَغْنٰى عَنِّيْ مَالِيَهْ ۚ هَلَكَ عَنِّيْ سُلْطٰنِيَهْ ۚ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान: मेरे कुछ काम न आया मेरा माल, मेरा सब ज़ोर जाता रहा ।

(पारह 29, अल ह़ाक़्क़ह:28-29)

(एह्याउल उ़लूम, जिल्द:4, स़-फ़ह़ा:511, दारुल कुतुबिल इ़ल्मिय्या, बैरूत)

दुन्या में आमद का मक़्स़द

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़क़ीक़त येह है कि इस दुन्या में आ कर हम सख़्त आज़माइश में मुब्तला हो गए हैं, हमारी आमद का मक़्स़द कुछ और था मगर शायद हम समझ कुछ और बैठे हैं ! हमारा अन्दाज़े ज़िन्दगी येह बता रहा है कि مَعَاذَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ गोया हमें कभी मरना ही नहीं, याद रखिये ! हमें यहां हमेशा नहीं रहना, इस दुन्या में आने का मक़्स़द सिर्फ़ माल कमाना या फ़क़त दुन्या के उ़लूम व फ़ुनून की डिग्रियां पाना और सिर्फ़ दुन्यवी तरक़्क़ियां ह़ासिल किये जाना नहीं है, क़ुरआने पाक में इर्शाद होता है:

أَفَحَسِبْتُمْ أَنَّمَا خَلَقْنٰكُمْ عَبَثًا وَّأَنَّكُمْ إِلَيْنَا لَا تُرْجَعُوْنَ ۝ ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान:*** तो क्या येह समझते हो कि हम ने तुम्हें बेकार बनाया और तुम्हें हमारी त़रफ़ फिरना नहीं ?

(पारह:18 अल मुअ्मिनून:115)

याद रख हर आन आख़िर मौत है
बन तू मत अन्जान आख़िर मौत है
मरते जाते हैं हज़ारों आदमी
आ़क़िलो नादान आख़िर मौत है
क्या ख़ुशी हो दिल को चन्दे ज़ीस्त से
ग़मज़दा है जान आख़िर मौत है
मुल्के फ़ानी में फ़ना हर शय को है
सुन लगा कर कान आख़िर मौत है
बारहा इ़ल्मी तुझे समझा चुके
मान या मत मान आख़िर मौत है

वज़ारतें काम नहीं आएगी

यक़ीनन अल्लाह तआ़ला ने इन्सान को अपनी इ़बादत के लिये पैदा किया है। अगर इस ने अपनी ज़िन्दगी के मक़्स़द में कामियाबी ह़ासिल नहीं की और बरोज़े मह़शर गुनाहों का अम्बार ले कर अपने परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ के दरबार में पेश हो गया तो दुन्या की बेशुमार दौलत भी उसे अपने रब عَزَّوَجَلَّ के क़हरो ग़ज़ब से नहीं बचा सकेगी। दुन्यवी उ़लूमो फ़ुनून, कारख़ाने, अस्लेह़े, दुन्यवी सोर्स (SOURCE), मन्स़ब, वज़ारतें, दुन्यावी आसाइशें, शोहरतें, क़ुव्वतें, दुन्यवी अ़ज़्मतें अल्लाह की बारगाह में सुर्ख़ रू नहीं कर सकेंगे।

www.dawateislami.net

इक़्तिदार के नशे में मस्त हो कर एक दूसरे के ऐ़बों को उछालने वालों, दहशत गर्दियों का बाज़ार गर्म करने वालों, मुसल्मानों के ह़ुक़ूक़ पामाल करने वालों के लिये लम्ह़ए फ़िक्रिय्या है, अगर मा'सिय्यत के सबब अल्लाह तआ़ला नाराज़ हो गया, उस के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم रूठ गए और ईमान बरबाद हो गया तो वोह वोह मुश्किलात दरपेश होंगीं जो कभी भी ह़ल नहीं होंगी। पारह 30 सूरतुल हुमज़ह में इर्शाद होता है :-

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝ وَيْلٌ لِّكُلِّ هُمَزَةٍ لُّمَزَةِ ۝ الَّذِىْ جَمَعَ مَالًا وَّعَدَّدَهٗ ۝ يَحْسَبُ اَنَّ مَالَهٗۤ اَخْلَدَهٗ ۝ كَلَّا لَيُنْۢبَذَنَّ فِى الْحُطَمَةِ ۝ وَمَاۤ اَدْرٰىكَ مَا الْحُطَمَةُ ۝ نَارُ اللّٰهِ الْمُوْقَدَةُ ۝ الَّتِىْ تَطَّلِعُ عَلَى الْاَفْـِٕدَةِ ۝ اِنَّهَا عَلَيْهِمْ مُّؤْصَدَةٌ ۝ فِىْ عَمَدٍ مُّمَدَّدَةٍ ۝

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान: अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान रह़मवाला। ख़राबी है उस के लिये जो लोगों के मुंह पर ऐ़ब करे पीठ पीछे बदी करे, जिस ने माल जोड़ा और गिन गिन कर रखा क्या येह समझता है कि उस का माल उसे दुन्या में हमेशा रखेगा, हरगिज़ नहीं ज़रूर वोह रौंदने वाली में फेंका जाएगा और तू ने क्या जाना क्या रौंदने वाली, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की आग कि भड़क रही है, वोह जो दिलों पर चढ़ जाएगी, बेशक वोह उन पर बन्द कर दी जाएगी। लम्बे लम्बे सुतूनों में।

(पारह:30, हुमज़ह)

चार बे बुन्याद दा'वे

ह़ज़रते सय्यिदुना शफ़ीक़ बल्ख़ी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی का इर्शाद है, ''लोग चार चीज़ों का दा'वा करते हैं मगर उन का अ़मल उन के दा'वे के ख़िलाफ़ है, (1) उन का ज़बानी क़ौल तो येह है कि हम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बन्दे हैं मगर उन के अ़मल आज़ादों जैसे हैं। (2) केहते हैं कि अल्लाह तआ़ला ही हमारी रोज़ी का कफ़ील है मगर वोह बहुत कुछ मालो दौलत जम्अ़ कर लेने के बा'द भी मुत़्मइन नहीं होते। (3) केहते हैं कि दुन्या से आख़िरत बेहतर है मगर वोह सिर्फ़ दुन्या ही की बेहतरी के लिये कोशां हैं, (4) कहा करते हैं कि हमें एक दिन ज़रूर मरना पड़ेगा मगर ज़िन्दगी का अन्दाज़ ऐसा है कि गोया कभी मरना ही नहीं।''

पहला दा'वा "मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का बन्दा हूं"

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई मक़ामे ग़ौर है यक़ीनन हर मुसल्मान येह इक़रार करता है कि ***मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का बन्दा हूं,*** और ज़ाहिर है बन्दा ''पाबन्द'' होता है, मगर आजकल अक्स़र मुसल्मानों के काम आज़ादों वाले हैं। देखिये ! जो किसी का मुलाज़िम होता है वोह उस की मरज़ी के मुत़ाबिक़ ही काम करता है, यक़ीनन हम अल्लाह तआ़ला के बन्दे हैं और उसी का रिज़्क़ खा रहे हैं, मगर अफ़्सोस हमारे काम कामिल बन्दों वाले नहीं, उस का हुक्म है नमाज़ पढ़ो, मगर सुस्ती कर जाते हैं, र-मज़ान के रोज़ों का हुक्म है, लेकिन वोह नहीं रख पाते। इसी त़रह़ दीगर अह़कामाते ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ की बजा आवरी में सख़्त कोताहियां हैं।

दूसरा[2] दा'वा "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही रोज़ी देने वाला है"

बेशक ''अल्लाह तआ़ला ही रोज़ी का कफ़ील है।'' मगर फिर भी हुसूले रिज़्क़ का अन्दाज़ निहायत अ़जीबो ग़रीब है। अल्लाह तआ़ला को रज़्ज़ाक़ عَزَّوَجَلَّ मानने और रोज़ी देने वाला तस्लीम करने के बा वुजूद न जाने क्यूं लोग सूद का लैन दैन करते, सूदी क़र्ज़े ले कर फ़ेक्ट्रियां चलाते और इमारतें बनवाते हैं ! जब अल्लाह तआ़ला को रोज़ी देने वाला तस्लीम कर लिया तो अब कौन सी बात रिश्वत लेने पर मजबूर करती है ? क्या वजह है कि मिलावट वाला माल फरेबकारी के साथ बेचना पड़ रहा है ? क्यूं चोरियों और लूट मार का सिल्सिला है ? रोज़ी के येह हराम ज़राएअ़ आख़िर क्यूं अपना रखे हैं ?

तीसरा[3] दा'वा "दुन्या से आरिव़रत बेहतर है"

यक़ीनन ''दुन्या से आख़िरत बेहतर है'' येह दा'वा करने के बा वुजूद स़द करोड़ अफ़्सोस ! अन्दाज़ सिर्फ़ और सिर्फ़ दुन्या को बेहतर बनाने वाला है, फ़क़त दुन्या की दौलत समेटने ही की मस़रूफ़िय्यत है, हर शख़्स़ दुन्या के माल ही का मतवाला नज़र आ रहा है और ज़िन्दगी जीने का त़र्ज़ येह बताता है गोया दुन्या से कभी जाना ही नहीं।

चौथा[4] दा'वा "एक दिन मरना पड़ेगा"

यक़ीनन "हमें एक दिन मरना पड़ेगा" येह तस्लीम करने के बा वुजूद अफ़्सोस स़द करोड़ अफ़्सोस ज़िन्दगी का अन्दाज़ ऐसा है गोया कभी मरना ही नहीं, देखिये ! "ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सने बस़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ "हमें एक दिन मरना पड़ेगा" के दा'वे की अ़मली तस्वीर थे, उन की ज़िन्दगी का अन्दाज़ येह था कि "हर वक़्त इस त़रह़ सहमे रहते थे जैसे उन्हें सज़ाए मौत सुना दी गई हो।" (मुलख़्ख़स़न एह़याउल उ़लूम, जिल्द:4, स़-फ़ह़ा:198, दारुल कुतुबिल इ़ल्मिय्या, बैरूत) जिस को आजकल "ब्लेक वॉरन्ट" केहते हैं। ह़ालां कि इन मा'नों में हर एक के लिये ब्लेक वॉरन्ट जारी हो चुका है कि जो भी पैदा हुवा है उसे मरना ही पड़ेगा, हर जानदार पैदा होने से क़ब्ल ही गोया "हिट लिस्ट" पर आ चुका है, या'नी पैदा होने से पहले ही, उस की रोज़ी और उ़म्र का तअ़य्युन हो गया बल्कि उस के दफ़्न होने की जगह भी मुक़र्रर हो चुकी। रेहमे मादर में इन्सान का पुतला बनाने के लिये फ़िरिश्ता ज़मीन के उस ह़िस़्से से मिट्टी लाता है जहां येह बन्दा उ़म्र गुज़ारने के बा'द मर कर दफ़्न होगा। सुनो ! सुनो ! बन्दा अपने ह़िस़्से की रोज़ी खा कर, ज़िन्दगी गुज़ार कर लोगों के कन्धों पर जनाज़े के पिंजरे में सुवार हो कर जब जानिबे क़ब्रिस्तान सिधारता है उस वक़्त क्या केहता है। चुनान्चे

जनाज़े का ए'लान

सरकारे मदीना, सुल्त़ाने बा क़रीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़े गंजीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया, "उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है अगर लोग उस का (या'नी मरने वाले का) ठिकाना देख लें और उस का कलाम सुन लें तो मुर्दे को भूल जाएं और अपनी जानों पर रोएं। जब मुर्दे को तख़्त पर रख कर उठाया जाता है उस की रूह़ फड़फड़ा कर तख़्त पर बैठ कर निदा करती है, "ऐ मेरे अहलो इ़याल ! दुन्या तुम्हारे साथ इस त़रह़ न खेले जैसा कि इस ने मेरे साथ खेला, मैं ने ह़लाल और ग़ैरे ह़लाल माल जम्अ़ किया और फिर वोह माल दूसरों के लिये छोड़ आया। उस का नफ़्अ़ उन के लिये है और उस का नुक़्सान मेरे लिये, पस जो कुछ मुझ पर गुज़री है उस से डरो।" (या'नी इ़ब्रत ह़ासिल करो।)

(अत्तज़्किरतु कुरतुबी, स़-फ़ह़ा:76, दारुल कुतुबिल इ़ल्मिय्या, बैरूत)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मक़ामे ग़ौर है ! वाक़ेई हर जनाज़ा ज़बरदस्त मुबल्लिग़ है और गोया हमें पुकार पुकार कर केह रहा है कि ऐ पीछे रह जाने वालो ! जिस त़रह़ आज मैं दुन्या से जा रहा हूं अनक़रीब तुम्हें भी मेरे पीछे पीछे आना है। या'नी ***जनाज़ा*** गोया हमारी रहनुमाई कर रहा है,

जनाज़ा आगे बढ़ के केह रहा है ऐ जहां वालो !
मेरे पीछे चले आओ तुम्हारा रहनुमा मैं हूं

मुर्दों से गुफ़्तुगू

शरहुस्सुदूर में है, "ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुस़य्यब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं एक बार हम ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم के हमराह मदीनए मुनव्वरा के क़ब्रिस्तान गए। ह़ज़रते मौला अ़ली كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم ने क़ब्र वालों को सलाम किया और फ़रमाया, "ऐ क़ब्र वालो ! तुम अपनी ख़बर बताओगे या हम तुम्हें बताएं ? सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि हम ने क़ब्र से "وَعَلَیْکَ السَّلَامُ وَرَحْمَۃُ اللّٰہِ وَبَرَکَاتُہٗ" की आवाज़ सुनी और कोई केहने वाला केह रहा था, "या अमीरल मुअ्मिनीन ! आप ही ख़बर दीजिये कि हमारे मरने के बा'द क्या हुवा ?" ह़ज़रते मौला अ़ली كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم ने फ़रमाया, "सुन लो तुम्हारे माल तक़्सीम हो गए, तुम्हारी बीवियों ने दूसरे निकाह़ कर लिये, तुम्हारी औलाद यतीमों में शामिल हो गई, जिस मकान को तुम ने बहुत मज़बूत बनाया था उस में तुम्हारे दुश्मन आबाद हो गए।" अब तुम अपना ह़ाल सुनाओ। येह सुन कर एक क़ब्र से आवाज़ आने लगी, ***"या अमीरल मुअ्मिनीन !*** हमारे कफ़न तार तार हो गए, हमारे बाल झड़ कर ***मुन्तशिर*** हो गए, हमारी खालें टुकड़े टुकड़े हो गईं, हमारी आंखें बेह कर रुख़्सारों पर आ गईं और हमारे नथनों से पीप बेह रही है और हम ने जो कुछ आगे भेजा (या'नी जैसे अ़मल किये) उसी को पाया, जो कुछ पीछे छोड़ा उस में नुक़्सान हुवा।" (शरहुस्सुदूर, स़-फ़ह़ा:206, दारुल कुतुबिल इ़ल्मिय्या, बैरूत) ***मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !*** पीछे क्या छोडा, इस पर भी बन्दा ग़ौर करे, ना जाइज़ कारोबार या गुनाहों के आलात वग़ैरा छोड़ कर मरे और वु-रसा इन चीज़ों को अपनाएं तो इस का अन्जाम इन्तिहाई लर्ज़ा खैज़ है, एक इ़ब्रत अंगेज़ वाकेआ सुनिये।

T.V. छोड़ कर मरने पर अ़ज़ाबे क़ब्र

एक इस्लामी भाई ने बरत़ानिया से तह़रीर भेजी थी उस का ख़ुलासा अपने अन्दाज़ो अल्फ़ाज़ में अ़र्ज़ करने की कोशिश करता हूं, "अन्दरूने सिन्ध रहने वाले एक बुज़ुर्ग ने बताया कि एक रात मैं क़ब्रिस्तान में एक ताज़ा क़ब्र के पास बैठ गया, ता कि इ़ब्रत ह़ासिल हो, बैठे बैठे ऊंघ आ गई और क़ब्र का ह़ाल मुझ पर मुन्कशिफ़ हो गया क्या देखता हूं कि क़ब्र वाला आग की लपेट में है और चिल्ला चिल्ला कर मुझ से केह रहा है, "मुझे बचाओ ! मुझे बचाओ !" मैं ने कहा, "मैं कैसे बचाऊं ?" उस ने कहा, थोड़े ही दिन पहले मेरा इन्तिक़ाल हुवा है, मेरा जवान बेटा इस वक़्त टी.वी. पर फ़िल्म देख रहा है, जब जब वोह ऐसा करता है मुझ पर शदीद अ़ज़ाब शुरूअ़ हो जाता है। ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के वासित़े मेरे जवान बेटे को समझाओ कि ऐ़श कोशियों में न पड़े, ***वोह येह टी.वी. न देखा करे क्यूं कि इसे मैं ने ख़रीदा था और अब उस की वजह से मैं अ़ज़ाब में फंस गया हूं,*** अफ़्सोस कि मैं ने उस की दुन्यवी

तरबिय्यत तो की लेकिन इस्लामी तरबिय्यत न की, उसे गुनाहों से मन्अ़ न किया और क़ब्रो आख़िरत के मुआ़मलात से ख़बरदार न किया।" क़ब्र वाले ने अपना नाम व पता भी बता दिया। चुनान्चे मैं सुब्ह़ क़रीबी बस्ती में वाक़ेअ़ उस शख़्स़ के मकान पर पहुंचा, नौ जवान ने रात टी.वी. पर फ़िल्म देखने का ए'तेराफ़ किया, मैं ने जब उस को अपना ख़्वाब सुनाया तो वोह स़दमे से रोने लगा और उस ने अपने घर से T.V. निकाल बाहर किया।

T.V. निकाल देने पर आक़ा ﷺ की मुबारकबाद

एक मेजर का बयान है, मैं उन दिनों मंगला डेम में हुवा करता था, "दीना" (जहलम) के इस्लामी भाइयों ने सुन्नतों भरे बयान की बा'ज़ केसेटें तोह़फ़े में दीं। वोह केसेटें घर में चलाई गईं। इन में सिन्ध के बुज़ुर्ग वाला वाक़ेआ़ भी था सुन कर हम सब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के अ़ज़ाब से डर गए और इत्तिफ़ाक़े राय से टी.वी. को घर से निकाल दिया। ख़ुदा की क़सम ! T.V. घर से निकालने के तक़रीबन एक हफ़्ते बा'द मेरे बच्चों की अम्मी ने (ग़ैब की ख़बर देने वाले) म-दनी सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत की और प्यारे प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया, ***मुबारक हो कि तुम्हारा घर से टी.वी. निकाल देने का अमल अल्लाह तआ़ला की बारगाह में मन्ज़ूर हो गया है।***

छोड़ दे टी.वी. को वी.सी.आर को
कर ले यूं राज़ी शहे अबरार ﷺ को

हीले बहाने मत कीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अब देखें कौन ख़ुशनस़ीब ऐसा है जो इस मुस़ीबत को अपने घर से निकालता है और مَعَاذَاللهعَزَّوَجَلَّ कौन बदनस़ीब ऐसा है कि टी.वी. छोड़ कर मरता और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ न करे, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ न करे, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ न करे क़ब्र में फंसता है ! शायद शैत़ान आप को वस्वसे डाले कि मा'लूम नहीं दा'वते इस्लामी वाले कहां कहां से येह वाक़ेआ़त उठा कर लाते हैं, टी.वी. तो "फ़ुलां फ़ुलां" के घर में भी है, देखिये ! मुझे मुत़्मइन करने के लिये येह दलील काफ़ी नहीं। आप को मुझे इस टी.वी. के फ़ज़ाइल बताने पड़ेंगे, म-स़लन समझाना होगा कि बे ह़या औ़रत को टीवी पर नाचते हुए देखने में مَعَاذَاللهعَزَّوَجَلَّ इतनी इतनी नेकियां मिलेंगी, नीज़ जो बे पर्दा औ़रत ख़बरें सुनाती है उस को देखने और सुनने में इतना इतना स़वाब है। नीज़ मूसीक़ी सुनने और क़ौमी तबाही के रक़्स देखने, वग़ैरा के फ़ज़ाइल भी बयान करने होंगे। यक़ीनन यक़ीनन यक़ीनन आप कभी भी इन के फ़ज़ाइल नहीं बता पाएंगे। आप मेरे बयान कर्दा वाक़ेआ़त को तस्लीम करें या न करें मगर ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ रखने वालों का ज़मीर पुकार पुकार कर केह रहा

होगा कि येह टी.वी. गुनाहों के मीटर को तेज़ी से चलाने वाला है । इस ने मुआ़शरे को तबाह व बरबाद कर के रख दिया, अख़्लाक़ ख़राब कर दिये, बे ह़याई और बे पर्दगी इस टी.वी. की वजह से बहुत ज़ियादा आम हुई । और कुछ कमी रह गई थी तो वोह डिश एन्टीना ने पूरी कर दी । T.V. ने हमारी बहू बेटियों को नितनए फ़ैशन सिखाए, हमारे नौ जवान बेटों को इ़श्क़ के अफ़साने सुना कर लड़कियों के इ़श्क़ में फंसा कर उन की ज़िन्दगियां तबाह कर दीं और इसी चक्कर में हमारी बहू बेटियों को बरबाद कर दिया । छोटे छोटे बच्चों की ह़ालत येह कर दी कि वोह मूसीक़ी की धुनों पर टांगें थिरकाते, नाच दिखाते नज़र आते हैं । अब रही सही कसर इन्टरनेट पूरी करने लगा है, मुसल्मान तबाह ह़ाल हो चुके हैं, काफ़िर त़ाक़तें बुरी त़रह़ पीछे पड़ गई हैं और उन्हों ने इस क़दर ज़ियादा ऐ़श कोशियों का आ़दी बना दिया है कि مَعَاذَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ अब मुसल्मान कुफ़्फ़ार के दस्ते निगर हो कर रह गए । ह़ालांकि एक दौर वोह था कि सिर्फ़ 313 मुसल्मान मैदाने बद्र में आए तो उन्हों ने कुफ़्फ़ारे ना हन्जार के एक हज़ार के लश्करे ज़र्रार के छक्के छुड़ा दिये । उन का ईमान येह था ।

न तैग़ो तीर पर तक्या न भाले पर न ख़ान्जर पर
भरोसा था ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ पर और सब नबियों के अफ़्सर صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَسَلَّم पर

और उन की शान येह थी कि

ग़ुलामाने मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَسَلَّم जान देने से नहीं डरते
येह सर कट जाए या रह जाए वोह परवा नहीं करते

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अपने गुनाहों से सच्ची तौबा कीजिये और येह भी अ़ह़द कीजिये कि आइन्दा गुनाहों से बच कर नेकियां अपनाएंगे । आइये चन्द गुनाहों का अ़ज़ाब सुनिये اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस से ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ पैदा होगा और तौबा करने की त़रफ़ रग़बत होगी ।

ख़ौफ़नाक वादी

जहन्नम में ग़य्य नामी एक ख़ौफ़नाक वादी है जिस की गरमी से जहन्नम की दीगर वादियां पनाह मांगती हैं, "येह वादी ज़ानियों, सूद ख़ोरों, झूटे गवाहों, मां बाप के ना फ़रमानों और बे नमाज़ियों के लिये है ।"

(रूहुल बयान, जिल्द:5, स़-फ़ह़ा:345, दारे एह़याउत्तुरासि़ल अ़रबी, बैरूत)

गन्जा अज़्दहा

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि रसूले पाक, सा़ह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जिस को अलाह عَزَّوَجَلَّ ने माल अ़त़ा फ़रमाया और उस ने उस की ज़कात अदा न की तो क़ियामत

के दिन उस के माल को एक गन्जे अज़्दहे की सूरत में बना दिया जाएगा कि उस अज़्दहे की दो[2] चित्तियां होंगी (जो उस के बहुत ही ज़हरीले होने की निशानी है) और वोह अज़्दहा उस के गले का तौक़ (या'नी हार) बना दिया जाएगा जो अपने जबड़ों से उस को पकड़ेगा और कहेगा, मैं हूं तेरा माल, तेरा ख़ज़ाना।

(सहीह बुख़ारी, हदीस:1403, जिल्द:1, स-फ़हा:474, दारुल कुतुबिल इल्मिय्या, बैरूत)

40 दिन तक नमाज़ें ना मक़्बूल

शराबें पीने वाले और हेरोईन और चर्स के कश लगाने वाले, ज़िना और जूए कि अड्डे चलाने वालों के लिये लम्हए फ़िक्रिय्या।

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायात है, "रसूलुल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : जो शराब पी लेगा चालीस[40] दिन तक उस की नमाज़ क़बूल नहीं होगी अगर उस ने तौबा कर ली तो अल्लाह तआ़ला उस की तौबा क़बूल फ़रमा लेगा फिर अगर दोबारा शराब पी ली तो फिर चालीस[40] दिन तक उस की नमाज़ क़बूल नहीं होगी अगर उस ने तौबा कर ली तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस की तौबा क़बूल फ़रमाएगा। फिर अगर तीसरी[3] बार शराब पी ली तो फिर चालीस[40] दिनों तक उस की नमाज़ क़बूल नहीं होगी अगर उस ने तौबा कर ली तो अल्लाह तआ़ला उस की तौबा क़बूल फ़रमाएगा। फिर अगर चौथी[4] मरतबा उस ने शराब पी ली तो फिर चालीस दिनों तक उस की नमाज़ क़बूल नहीं होगी इस के बा'द उस ने तौबा कर ली तो उस की तौबा क़बूल नहीं होगी और क़ियामत के दिन उस को जहन्नम में दोज़ख़ियों की पीप की नहर में से पिलाया जाएगा।

(जामेए़ तिरमिज़ी, हदीस:1869, जिल्द:3, स-फ़हा:341, दारुल फ़िक्र बैरूत)

शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की शराब से नफ़रत

हज़रते अमीरुल मुअ्मिनीन सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم शराब से नफ़रत का इज़्हार करते हुए फ़रमाते हैं, "अगर किसी कूंएं में शराब का एक क़त़रा गिर जाए और उस पर मनारा ता'मीर किया जाए मैं उस मनारे पर अज़ान न दूं, अगर किसी दरया में शराब का एक क़त़रा गिर जाए फिर वोह दरया ख़ुश्क हो जाए और वहां घास उग आए तो उस घास पर मैं अपने जानवर न चराऊं।"

(रूहुल बयान, जिल्द:1, स-फ़हा:340, दारे एह्याउत्तुरासिल अ़रबी, बैरूत)

ज़ालिम वालिदैन की भी इत़ाअ़त

मां बाप की ना फ़रमानी करने वालों को घबरा कर तौबा कर लेनी और वालिदैन से मुआ़फ़ी मांग कर उन को राज़ी कर लेना चाहिये। ह़ज़रते सय्यिदुना

अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है, सरकारे नामदार, मक्के मदीने के ताजदार, मह़बूबे परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "***जो*** शख़्स अपने मां बाप का फ़रमांबरदार होता है उस के लिये जन्नत के दो[2] दरवाज़े खुल जाते हैं, अगर मां बाप में से एक ही मौजूद हो और वोह एक ही का फ़रमांबरदार हो तो उस के लिये जन्नत का एक दरवाज़ा खुल जाता है। और जो शख़्स अपने मां बाप का ना फ़रमान होता है उस के लिये जहन्नम के दो दरवाज़े खुल जाते हैं और अगर मां बाप में से एक ही मौजूद हो और वोह एक ही का ना फ़रमान हो तो जहन्नम का एक ही दरवाज़ा उस के लिये खुलता है। येह सुन कर एक स़हाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ किया अगर्चे उस के मां बाप उस पर ज़ुल्म करते हों ? तो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया कि अगर्चे उस के मां बाप ने उस पर ज़ुल्म किया हो, अगर्चे उस के मां बाप ने उस पर ज़ुल्म किया हो, अगर्चे उस के मां बाप ने उस पर ज़ुल्म किया हो।"

(शुउ़बुल ईमान, ह़दीस़:7916, जिल्द:6, स़-फ़ह़ा:206, दारुल कुतुबिल इ़ल्मिय्या बैरूत)

वा'दा रिव़लाफ़ी का वबाल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर वालिदैन ख़िलाफ़े शरीअ़त हुक्म दें तो उस बात में उन की फ़रमांबरदारी न की जाए। म-स़लन ह़राम रोज़ी कमा कर लाने या दाढ़ी मुंडाने का हुक्म दें तो येह बातें न मानी जाएं, ***गुनाह की बातों में मां बाप की फ़रमांबरदारी करने वाला गुनहगार और जहन्नम का ह़क़दार होगा।*** जो बात बात पर वा'दा कर लेते मगर बिला उ़ज़्रे शर-ई पूरा नहीं करते उन के लिये मक़ामे ग़ौर है।

अमीरुल मुअ़्मिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم रिवायत फ़रमाते हैं कि मक्के मदीने के सुल्त़ान, सरकारे दो जहान صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है "जो किसी मुसल्मान से अ़ह्द शिक्नी करे उस पर अल्लाह तआ़ला और फ़िरिश्तों और तमाम इन्सानों की ला'नत है और उस का कोई फ़र्ज़ क़बूल होगा न नफ़्ल।"

(बुख़ारी शरीफ़, ह़दीस़:1870, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:616, दारुल कुतुबिल इ़ल्मिय्या, बैरूत)

पेट में सांप

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, सरकारे मदीनए मुनव्वरा, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि मे'राज की रात मुझे एक ऐसी क़ौम के पास सैर कराई गई कि उन के पेट कोठियों के मिस़्ल थे जिन में सांप भरे थे जो पेटों के बाहर से नज़र आ रहे थे। मैं ने पूछा, ऐ जिब्रईल येह कौन लोग हैं ? तो उन्हों ने कहा, "येह सूद खाने वाले हैं।"

(सुनने इब्ने माजा, ह़दीस़:2273, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:71, दारुल मा'रेफ़ा, बैरूत)

36 बार ज़िना से बुरा

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन हन्ज़ला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि अल्लाह के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, सूद का एक दिरहम जानबूझ कर खाना छत्तीस[36] मरतबा ज़िना करने से भी ज़ियादा सख़्त और बड़ा गुनाह है।

(सुनने दारे कुत्नी, ह़दीस़:2819, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:19)

जहन्नम का तोशा

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि बन्दा जो ह़राम माल कमाएगा अगर ख़र्च करेगा तो उस में ब-र-कत न होगी और अगर स़-दक़ा करेगा तो वोह मक़्बूल नहीं होगा और अगर उस को अपनी पीठ के पीछे छोड़ कर मर जाएगा तो वोह उस के लिये जहन्नम का तोशा बन जाएगा।

(मुस्नदे इमाम अह़मद, ह़दीस़:3672, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:34 दारुल फ़िक्र, बैरूत)

सात म-दनी उ़सूल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! होश में आइये, ग़फ़्लत से बेदार हो जाइये, झट पट गुनाहों से तौबा कर लीजिये, फिरंगी तहज़ीब से पीछा छुड़ाइये, मीठे मीठे आक़ा मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मीठी मीठी सुन्नतें अपनाइये, अपनी इस्लाह़ के साथ साथ दूसरों की इस्लाह़ का भी ज़ेहन बनाइये, नेकी की दा'वत की ख़ात़िर मर मिटने का जज़्बा पैदा कीजिये, जानो माल और वक़्त सब कुछ एह़याए सुन्नत के लिये क़ुरबान करने का ज़ौक़ बढ़ाइये और निय्यत फ़रमाइये कि ***मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।*** اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये ***म-दनी इन्आ़मात*** पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र करना है। इन दोनों म-दनी कामों का आ़दी बनने के लिये मुझे अपनी ज़ात पर येह ***सात म-दनी उ़सूल*** नाफ़िज़ करने हैं। (1) हर नामाज़ बा जमाअ़त मस्जिद में अदा करनी है और उस के लिये हर नमाज़ में कम अज़ कम एक को दा'वत दे कर अपने साथ मस्जिद में ले जाने की कोशिश करनी है। (2) रोज़ाना कम अज़ कम ***दो घन्टे*** दा'वते इस्लामी के म-दनी कामों पर स़र्फ़ करने है। (3) हफ़्ते में एक रोज़ अ़लाक़ाई दौरा बराए ***नेकी की दा'वत*** में अव्वल ता आख़िर शिर्कत करनी है। (4) हफ़्तावार इजतिमाअ़ में पाबन्दी के साथ शरूअ़ से ख़त्म तक ह़ाज़िरी देनी है। (5) रोज़ाना ***म-दनी इन्आ़मात*** का कार्ड पुर करना और हर म-दनी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर ज़िम्मादार को जम्अ़ करवाना है (6) ज़िन्दगी में यकमुश्त 12 माह, हर 12 माह में 30 दिन और उ़म्र भर हर माह तीन दिन के लिये, म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र करना है। (7) इन्फ़िरादी कोशिश के ज़रीए इस्लामी भाइयों को म-दनी माह़ौल में लाना है।